रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्याल के पहले दीक्षांत समारोह में

माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक 8 अप्रैल 2024, सोमवार	समय : 12.00 Noon	स्थान : होजाई, असम

- दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में मंच पर विराजमान उत्तर-पूर्व विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, जोरहाट के संचालक **प्रो. वीरेन्द्र मणि तिवारी जी,**
- विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो. अमलेन्दु चक्रवर्ती जी,**
- रजिस्ट्रार **श्री तिलक चन्द्र कलिता जी**,
- संकाय के डीन **प्रो. कौशिक चंदा जी,**
- विभिन्न विश्वविद्यालयों के सम्माननीय कुलपतिगण,
- विभिन्न शिक्षण संस्थानों के सभी प्रमुख,
- रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के फैकल्टी मेम्बर्स,
- एक्जीक्यूटिव कॉन्सिल एवं एकेडेमिक कॉन्सिल के सदस्यगण,
- सभी शिक्षानुरागी गणमान्य विद्वद्जन और
- विश्वविद्यालय परिवार के समस्त सदस्यगण तथा
- प्रिय विद्यार्थियो!

आप सभी का स्वागत एवं अभिनन्दन।

सबसे पहले मैं रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह के शुभ अवसर पर आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं। मुझे यहां आप सबके बीच उपस्थित होकर अत्यधिक हर्ष की अनुभूति हो रही है।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय की स्थापना गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के जीवन-दर्शन एवं आदर्शों पर आधारित मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करने के लिए असम सरकार द्वारा वर्ष 2019 में की गई।

प्रसन्नता की बात है कि विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के पांच वर्ष पूर्ण करने जा रहा है। इन पाँच वर्षों की अवधि में सीमित संसाधनों से शुरुआत करने वाला यह विश्वविद्यालय देश और समाज की आकांक्षाओं को पूरा करने के मार्ग पर अग्रसर है।

हर्ष की बात है कि विश्वविद्यालय ने इस अल्प अवधि में ही आठ विषय में स्नातकोत्तर तथा दस विषयों में पीएच.डी. की शिक्षा आरंभ कर अपने उद्देश्यों को अर्जित करने की दिशा में तत्परता से कदम बढ़ाएं हैं।

आज दीक्षांत समारोह के अवसर पर मैं विश्वविद्यालय के कुलपति एवं समस्त शिक्षकों को बधाई देते हुए 5 वर्ष की अवधि में ही शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाने पर सराहना करता हूं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन की दिशा में यह विश्वविद्यालय असम के अग्रणी उच्च शिक्षण संस्थाओं में से एक है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह विश्वविद्यालय महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव और गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के जीवन-दर्शन पर आधारित मूल्यनिष्ठ शिक्षा से विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देने में सफल होगा।

आज के दीक्षांत समारोह में उपाधियां एवं स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों की मैं विशेष रूप से सराहना करता हूं। मेरी जानकारी में आया है कि समारोह में 439 स्नातक तथा 130 स्नातकोत्तर स्तर की उपाधियां प्रदान की जा रही हैं।

प्रिय विद्यार्थियो,

आपके विश्वविद्यालय की अत्यंत गौरवशाली विरासत का एक प्रमाण यह है कि इसका नाम भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार से सम्मानित गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाम से जुड़ा है। गुरुदेव विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार और दार्शनिक तो थे ही, वे बांग्ला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नई जान फूँकने वाले युगदृष्टा भी थे। भारतीय साहित्य में नये मानक रचने वाले गुरुदेव अपने मानवतावादी दृष्टिकोण के कारण सही मायनों में एक विश्वकवि थे। संसार में भारतीय साहित्य का परचम लहराने वाले गुरुदेव के जीवन-मूल्यों को आप अपने आचरण में ढालकर अपना जीवन धन्य कर सकते हैं।

कहना न होगा कि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा को व्यापक अर्थ में लिया है। उनके दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मनुष्य का शारीरिक, बौद्धिक, आर्थिक, व्यावसायिक, धार्मिक और आध्यात्मिक विकास करती है। शिक्षा का कार्य हमें पूर्ण मनुष्यत्व में पहुंचाना है। इस संदर्भ में मैं गुरुदेव टैगोर के लेख का उल्लेख करना चाहूंगा, जिसमें उन्होंने कहा है कि -

"सर्वोत्तम शिक्षा वहीं हो, जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।"

टैगोर ने शिक्षा के प्राचीन भारतीय आदर्श **-'सा विद्या या विमुक्तये'** को ध्यान में रखा है। श्री विष्णु पुराण में उल्लिखित इस श्लोक का अर्थ है कि 'कर्म वही है, जो बंधन में ना बांधे, विद्या वही है, जो मुक्त करे।' इस आदर्श के अनुसार शिक्षा मनुष्य को आध्यात्मिक ज्ञान देकर उसे जीवन एवं मरण से मुक्ति प्रदान करती है।

शिक्षा के इस प्राचीन आदर्श को भी व्यापक रूप देने वाले टैगोर का कहना है कि शिक्षा मनुष्य को न केवल आवागमन से वरन् आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और मानसिक दासता से भी मुक्ति प्रदान करती है। अत: मनुष्य को शिक्षा द्वारा उस ज्ञान का संग्रहण करना चाहिये जो उसके पूर्वजों द्वारा संचित किया जा चुका है, यही सच्ची शिक्षा है।

मित्रो,

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का क्रियान्वयन सही दिशा में उठाया गया एक अहम कदम है। नई शिक्षा नीति व्यापक रूप से भारत की नई शिक्षा प्रणाली के दृष्टिकोण को रेखांकित करती है और प्राचीन उच्च आदर्शों का संवर्धन करने की प्रेरणा भी देती है।

मुझे विश्वास है कि उच्च शिक्षा में प्रमुख सुधारों पर केन्द्रित यह शिक्षा नीति ही अगली पीढ़ी को नए डिजिटल युग में अपेक्षित प्रतिस्पर्धा का हिस्सा बनने के लिए सक्षम बनाएगी।

उच्चतर शिक्षा का उद्देश्य रोजगार के अवसरों का सृजन करने के साथ ही प्रगतिशील और समृद्ध राष्ट्र का प्रतिनिधित्व भी करना है। नई शिक्षा नीति गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसर पैदा करने पर ज़ोर देती है, जिससे संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य 2030 में सूचीबद्ध सम्पूर्ण रोज़गार, उत्पादकपूर्ण रोज़गार और गरिमापूर्ण श्रम के लक्ष्य को हासिल किया जा सके।

प्रिय विद्यार्थियो,

आज का यह दीक्षांत समारोह आपके जीवन का भी एक महत्त्वपूर्ण दिन है। आज से आप एक ऐसी दुनिया में कदम रखने जा रहे हैं, जहाँ चुनौतियों के साथ-साथ अनंत संभानवाएँ भी मौजूद हैं। आने वाले वर्षों में आपको भारत की विकास यात्रा में महत्त्वपूर्ण योगदान देना है।

दीक्षांत समारोह का अर्थ यह नहीं है कि आज से आपकी लर्निंग समाप्त होने जा रही है। बल्कि यह समारोह आपको इस बात का संदेश देता है कि अब जीवन के कर्मक्षेत्र से आपके सीखने की आकांक्षा और तीव्र होनी चाहिए। सीखने की इस ललक को कभी कम मत होने दीजिएगा।

ज्ञान अथाह सागर की तरह है और हम जो जानते हैं वह एक बूँद के बराबर भी नहीं है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को यह मानकर चलना चाहिए कि मैं कुछ नहीं जानता। यदि यह भाव हमारे जीवन में बना रहता है तो आने वाला हर क्षण हमारे जीवन में एक नई सफलता लायेगा।

हमारा सपना है कि वर्ष 2047 तक भारत एक विकसित देश बने। आपके पास एक स्वर्णिम भविष्य के निर्माण की न केवल अपार संभावनाएं हैं, बल्कि उनके अनुकूल परिस्थितियाँ भी हैं।

आपका दायित्व है कि आप इस सपने को साकार करने की दिशा में पूरे मनोयोग से अपनी भागीदारी निभाये। इसके लिए आपको प्रतिज्ञा लेनी होगी कि जब भारत अपनी आजादी के 100 साल पूरे कर रहा हो तब आने वाली पीढ़ियां एक ऐसे विकास समावेशी भारत में जन्म लें जो खुशहाल हो, सम्पन्न हो, समृद्ध हो।

आपका दायित्व अपने लिए एक स्वस्थ और मूल्यनिष्ठ समाज का निर्माण करना है। साथ ही आपका यह भी नैतिक कर्तव्य है कि आप देश के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। आप आज यह प्रतिज्ञा लें कि आप जिस भी क्षेत्र में कार्यरत होंगे, वहाँ समृद्ध एवं विकसित भारत के निर्माण के लिए कार्य करेंगे, एक ऐसे समाज के निर्माण के लिए कार्य करेंगे जहां समता और समरसता हो और जहां प्रत्येक व्यक्ति का जीवन गरिमापूर्ण हो।

देवियो और सज्जनो,

आज भारत के पास 5-डी अर्थात् **डिमांड, डेमोग्राफी, डेमोक्रेसी, डिजायर** और **ड्रीम** है। यह 5-डी हमारे विकसित भारत की विकास यात्रा में अत्यंत लाभकारी सिद्ध होंगे। हमारी अर्थव्यवस्था जो एक दशक पहले 11वें पायदान पर थी आज 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरी है तथा वर्ष 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। भारत विश्व के सबसे युवा देशों में से एक है। देश के युवा ही हमारा सबसे बड़ा संसाधन और सबसे बड़ी पूंजी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय परम्पराओं से जुड़े रहकर युवाओं द्वारा 21वीं सदी की चुनौतियों के अनुरूप विश्व-स्तरीय दक्षता प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। जैसा कि आप सभी जानते हैं हमारे देश की परम्पराएं अत्यंत समृद्ध हैं और उन्हें अक्षुण्ण बनाये रखने में अनेक विभूतियों के संघर्षों और प्रयासों का अमूल्य योगदान रहा है।

इस विश्वविद्यालय के नाम का महत्व इसलिए और भी अधिक बढ़ जाता है कि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने करुणा और मानवता के आदर्श को स्थापित करने का संदेश दिया था। समानता और सामाजिक समरसता के उनके आदर्शों पर चलकर ही आज के युवा संवेदनशीलता के साथ सबके हित के बारे में सोच सकते हैं और श्रेष्ठ समाज का निर्माण कर सकते हैं।

प्यारे विद्यार्थियो,

गुरुदेव ने अपने साहित्यिक योगदान से विश्व समुदाय में भारत का गौरव बढ़ाया है। आज की युवा-पीढ़ी को जिस वैश्विक परिवेश में आगे बढ़ना है, उसमें भारत की स्थिति बहुत मजबूत है तथा हमारी गणना विश्व समुदाय के अग्रणी राष्ट्रों में होती है।

विश्व में परिवर्तन की तेज गति के साथ नये अवसरों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है। इस परिवर्तनशील संसार तथा अपार संभावनाओं से भरी व्यवस्था में आपको भविष्य के निर्माण में अपना योगदान देना है। राज्य और राष्ट्र के विकास के लिए आप जैसे योग्य एंव प्रतिभाशाली युवाओं की क्षमता और विशेष गुणों की सदैव अपेक्षा रहेगी। यह कार्य तभी संभव होगा जब आपकी शिक्षा, आपकी डिग्री और आपके मेडल्स समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति के जीवन में बदलाव लायें। आप सभी राष्ट्र के निर्माण में योगदान दें। इस ध्येय के साथ नये सफर पर आगे बढ़िये।

मेरा आग्रह है कि आपने रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय से शिक्षा का जो मूल ध्येय को अर्जित किया है वह व्यावहारिक जीवन में मानव सेवा का माध्यम बने - यह आपके जीवन का संल्कप होना चाहिए। आप सफलता के नये शिखरों को स्पर्श करें। मैं यह भी कामना करता हूँ कि पूरे विश्व में आपकी यश पताका फहराए।

मैं इस विश्वविद्यालय के पहले दीक्षांत समारोह में सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और सभी पदाधिकारियों को बधाई देता हूँ। आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए अनंत शुभकामनाओं के साथ मैं आशा करता हूँ कि आप सभी विकसित राज्य और राष्ट्र के निर्माण में दृढ़ संकल्प और प्रतिबद्धता के साथ अपना अमूल्य योगदान देंगे।

अंत में, मैं एक बार पुनः उपाधियां और पदक प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आधिकारिक तौर पर विश्वविद्यालय के पहले दीक्षांत समारोह के उद्घाटन की घोषणा करता हूँ।

धन्यवाद!

जय हिन्द!

जय भारत!